प्रश्न 17. मैथिली पत्र–पत्रिकाक विकासक समीक्षा करू।

उत्तर :– भाषा ओ साहित्यक विकास निर्भर रहैत छैक प्रचार ओ प्रसार पर। प्रचार–प्रसार अनेक माध्यमेसँ एक महत्वपूर्ण योगदान अछि। पत्र पत्रिकाक अध्ययन ओ अनुशीलन सँ भाषा ओ साहित्यक अध्येताके विकास क्रम बुझबामे पूर्ण सहायता ओ सुविधा प्राप्त होइत छनि। भाषा ओ शब्दक स्वरूप जनकण्ठक प्रवाहमे बहैत–बहैत एक एहन स्वरूप ग्रहण क लैत अछि जे साहित्यक सराइमे पहुँचि पूज्य ओ प्रयोक्तव्य भ जाइत अछि। जन कण्ठक प्रवहामे बनल एहन शब्द जतय पत्र पत्रिका एहन–एहन शब्दके प्रयोगमे आनि भाषाक स्वरूपके स्थिरता प्रदान करैत अछि जाहिसँ एक क्षेत्रीय भाषा आन क्षेत्रीय भाषासँ पृथक अपन स्वतंत्र अस्तित्व बनाय रखबामे सक्षम होइत अछि।

ओना तँ भारतवर्षाहिमे पत्र–पत्रिकाक इतिहास वेशी प्राचीन नहि अछि, मैथिलीमे पत्र–पत्रिका त 1905 ई0 सँ प्रारम्भ भेल अछि, मुदा एहि अल्प अवधिमे ई विकासक पथ पर चलैत अनेकानेक उपलब्धिसँ मैथिली साहित्यक उत्कर्ष, दिशा निर्देश ओ उन्नयन करैत जन चेतनाक दीप सेहो प्रज्वलित कएने रहल। मैथिल हितसाधन 1905 ई मे जयपुरसँ विद्या वाचस्पति स्व0 मधुसूदन झा तथा रामभद्र झा, मुख्य न्यायाधीश, अलवर स्टेटके द्वारा श्रीगणेश भेल। यद्यपि ई मासिक पत्रिका मात्र तीनहि वर्षक अल्पायुमे मैथिलीक उत्कर्षक हेतु श्लाध्य ओ स्तुत्य प्रयास कयलक। एहि पत्रिकाक नीति छल जनिका सबहिके हाहा–हीही, लल्लो–चप्पो, गीत कविताक अतिरिक्त गम्भीर लेख सबहिक रसास्वादनक योग्यता नहि छन्हि, तादृश व्यक्ति ग्राहक नहि रहलासँ हित साधनक कोनो त्रुटि नहि। ई पत्रिका ज्ञानक विभिन्न क्षेत्र जेना स्वास्थ्य, भूगोल, दर्शन, गणित आदि विषयक अतिरिक्त सामाजिक गुण दोषक विवेचन सेहो करैत छल। विविध विषयसँ सज्जित सुललित गीत एवं सरस काव्यसँ युक्त ई पत्रिका वस्तुतः मैथिली साहित्य गगनमे शुक्रतारा सदृश्य आयल आ अपन आलोकसँ मैथिली साहित्यक सम्बर्द्धन करैत तिरोहित भए गेल।

मिथिला मोद 1906 ई0 मे काशीसँ म0 म0 मुरलीधर झा के सम्पादनमे प्रकाशित भेल। बादमे पं0 अनुप मिश्र पं0 सीताराम झा तथा उपेन्द्र नाथ झा सेहो सम्पादन मे सहयोगी बनि गेलाह। मिथिला मोदक प्रकाशनमे कतेको गतिरोध आयल मुदा बन्द होइत पुनि चलैत 36 वर्ष धरि जीवैत रहल। ई कतेको कवि, कथाकार, लेखक के जन्म देल परंच दीर्घजीवी नहि रहि सकल। एहि कार्यकाल मे देशमे नव भावनाक जागृति, व्यंग्य आ

Scanned by CamScanner

समालोचना द्वारा अपन कर्त्तव्यक सम्यक रूपे पालन कैल, जाहिसँ मैथिली साहित्य आ समाजक व्यापक हित भेल। एहि पत्रिका सभक व्यापक प्रभाव मिथिला आ मैथिल समाज पर पड़ल जे मिथिलासँ दूर–दूर प्रदेशसँ मैथिली हित मे पत्रिका बहार भ रहल अछि मुदा मिथिलावासी सूतल छथि। सम्भवतः मिथिला नरेश पर सेहो एकर प्रभाव पड़ल। मिथिलासँ दूर मैथिल विद्वानक स्तुत्य प्रयाससँ प्रभावित भ 1908 ई0 मे दरभंगा महराजक संरक्षण मे मिथिला मिहिरक प्रकाशन प्रारम्भ भेल जे मासिक छल, बादमे साप्ताहिक ओ दैनिक सेहो भेल। मिथिला मिहिरक पहिल सम्पादक भेल रहैथ पं0 विष्णुकान्त झा बी0 ए0 एल0 बादमे कपिलेश्वर झा शास्त्री पं0 योगानन्द कुमार पं0 जनार्दन झ आ पं0 सुरेन्द्र झा सुमन।

मिथिला मिहिरक नीति सर्वदा अत्यन्त नरम आ भाषा त्रुटिपूर्ण ओ शिथिल रहैत छल। प्रेसक त्रुटि सेहो रहिते छल। एहिमे हिन्दीक प्रधानता रहैत छल। बादमे अंग्रेजीके सेहो स्थान भेटय लगलै। बादमे पूर्ण मैथिली भाषा मे सेहो प्रकाशित होमय लागल। जे सप्ताहिकसँ दैनिक सेहो भेल। मिथिलाक मैथिली पत्र जे सभसँ अधिक पढ़यबला यैह पत्र भेल। मिहिर आधुनिक मैथिली साहित्यक निर्माणमे एकर विशिष्ट महत्व छैक। एहि पत्रक कारणे अनेको लेखक, कवि साहित्यकार भ गेलाह। जे मिथिला भरिमे यशस्वी सेहो भेलाह। तीन दर्जनसँ अधिके उपन्यास कथा आदिक धारावाहिक प्रकाशन भेल। अनगिनत कविक कविता छपिते कवि बनि गेलाह। सामाजिक सरोकार त मिहिरक ऐहने छल जे मिथिलामे कहिओ वर्ण भेद नहि भेल, सामाजिक एकता सतत बनल रहल। पत्रक कोनो तरहक अपील वा निवेदन के सभके मान्य। मिहिर वस्तुतः अपन नामके सार्थक क काल कवलित भेल।

श्री उदित नारायण दास ओ नन्दकिशोर द्वारा संयुक्त सम्पादकत्वमे लहेरियासरायसँ श्री मैथिली नामक मासिक पत्रिकाक प्रकाशन प्रारम्भ भेल। एकर प्रथमहि अंकमे पत्र प्रकाशनक आवश्यकताके स्पष्ट करैत सम्पादक लिखने छलाह मैथिली प्रकाशनक प्रथम उदेश्य थिक मिथिला भाषा मध्य प्रौढ़ताक सम्पादन। जाहि भाषा मध्य सर्वप्रथम हृदय मध्य हर्ष शोक गौरव, घृवा आदि नाना भावक उत्थान होइत अछि ताहि भाषाक रक्षा ओ वृद्धि करब हमरा लोकनिक प्रथम कर्त्तव्य थिक। वस्तुतः ई । लोक शैली आ लोक भाषाक प्रथम पत्रिका छल। एहिमे साहित्यिक समीक्षात्मक निबन्धक अतिरिक्त एहिमे लोकोपयोगी विषयक निबन्ध प्रकाशित होइत छल। मुदा ई दू वर्ष चलिके बन्द भ गेल।

मिथिला नामक मासिक पत्रिका 1929 ई0 मे श्री कुसेश्वर कुमर ओ बाबू भोला लाल दासक सम्पादकत्व मे प्रकाशन तँ भेल, मुदा इहो अकाल कालकवलित भए गेल। किछु

Scanned by CamScanner

वर्षक बाद बाबू भोला लाल दासक सम्पादकत्वमे भारती क प्रकाशन 1937 ई0 भेल। जाहिमे गंभीर साहित्यक प्रकाशन होइत छल। समालोचना यात्रा आ स्थायी साहित्यक महत्वक दृष्टिसँ भारतीक उल्लेखनीक स्थान पत्र–पत्रिाक इतिहासमे अछि।

बिभूति एक क्रांतिकारी विचारक निर्भीक पत्रिका बाबू भूवनेश्वर सिंह भुवन जीक सम्पादनमे प्रकाषित होइछ। एहि अल्पजीवी पत्रक मैथिली भाषा आ साहित्य पर विशिष्ट प्रभाव पड़ल। मुख्य रूपसँ मैथिली गद्यक विकासमे विभूति एक नव शिल्पके सृजन कैल। जाहिसँ मैथिली गद्यक महत्व बढ़ल। एहिकालमे दरभंगा सँ मैथिली साहित्य पत्र जे पुस्तक मालाक रीतिक पत्रिका छल। एहि पत्रक सम्पादक छलाह स्वनाम धन्य स्व0 रमानाथ झा। ई नव रीतिक पत्रिका मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकासमे स्थायी महत्वक काज कयलक। यद्यपि एहू पत्रके अकाले जाय पड़लै परंच कम समयमे जे अपन गवेषणात्मक निबन्धक एवं अनेकानेक पोथीक प्रकाशन भेल से एतिहासिक महत्व अछि। आचार्य सुरेन्द्र झा सुमन साहित्यिक पत्रक गत्यावरोध के 1948 ई0 मे स्वदेश नामक मासिक पत्रक प्रकाशन सँ दूर कैलनि। स्वदेश मासिकसँ सप्ताहिक पुनः अर्द्धसप्ताहिक आ किछु दिन दैनिक सेहो प्रकाशित भेल। स्वदेशक साहित्यिक रचना आ गवेषणात्मक निबन्ध मैथिली साहित्यक समवर्द्धनमे विशिष्ट महत्व रखैत अछि। 1953 ई0 मे श्री प्रवोधा नारायण सिंहक सम्पादकत्वमे मिथिला दर्शन प्रकाशित भेल। जे किछु दिन चलय आ बन्द भ जाय पुनः चलय आ बन्द भ जाय। 1960 ई0 मे इजोत नामक साहित्यिक पत्रिका सुमनजी, शेखरजी आ अमर जीक संयुक्त सम्पादनमे प्रारम्भ भेल। ई मात्र तीन अंक प्रकाशित भेल। सहरसासँ प्रो0 मायानन्द मिश्रक सम्पादनमे अभिव्यंजना नामक पत्रिका प्रकाशित भेल। एहि पत्रक मुख्य उदेश्य छल नव कविता कथा आदिक प्रकाशन करब।

1944 ई0 मे प्रयागसँ धीया पुताक मनोरंजनक वास्ते बटुक प्रकाशित भे जे बहुत दिन धरि चलल आ नेना सभक मनोरंजन करैत रहल। मुदा लोहनासँ धीयापुता क प्रकाशन 1957 ई0 मे प्रारम्भ भेल परंच 1960 ईव धरि चलि सकल। कृष्णभवन, उदयन, निर्वाण, मिथिला दूत पत्रिका विभिन्न स्थानसँ प्रकाशित भेल आ बन्द भ गेल। 1968 ई0 मे मैथिली कविता नामक पत्रिका नचिकेताक सम्पादनमे प्रकाशित होमय लागल। जे नव कविताके एक नंव दिशा प्रदान कैलक। कलकत्तासँ मैथिली प्रकाश आ पटना सँ मिथिला भासी प्रकाशित भेल।

Scanned by CamScanner